मुरलीधर वैष्णव

पूर्व में ऋषि मुनि अपने कमंडल से अपनी हथेली में मुझे लेकर मंत्र बोलते हुए जब मुझे सामने वाले पर छिड़क कर श्राप या वरदान देते थे तो जो वे बोलते वह अटल सत्य हो जाता था। तो फिर इस सब में कहीं मेरी भूमिका भी तो होती है। आज भी लोग कोई संकल्प लेते हैं तो हाथ में जल लेकर लेते हैं। कथा और संकल्प के समय कोई साक्षी नहीं मिलता है तो कलश में मुझे भर कर मुझे साक्षी के रूप में स्वीकार करते हैं। जल ने यह सब एक श्वांस में कह डाला।

कमल को बहुत छोटी उम्र से ही जल के प्रति एक विशेष लगाव है। अभी भी 12 साल की ही तो उसकी उम्र है। बचपन ही तो है उसका। अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि वह बचपन और किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ा है। कुछ अजीब सा आकर्षण है उसका जल के प्रति-माँ के साथ मॉल में खरीददारी करने जाता है तो वहां फव्वारे और एक्वेरियम को ही टकटकी लगाये देखा करता है। पिकनिक में दोस्तों के साथ जंगल में जाता है तो बहते हुए झरने को घंटों निहारता रहता है। तालाब, झील और यहां तक कि स्वीमिंग पूल में तैरते हुए जल से खेलना उसे बहुत अच्छा लगता है। इतना ही नहीं, कभी गहरी नींद के कारण सुबह देर तक सोया रहता है तो माँ पानी के हलके छींटों से उसे जगाती है। उसे ऐसे जगाना भी अच्छा ही लगता है।

एक दिन वह थका-मांदा खाना खाकर बिस्तर पर लेटा ही था कि वह क्या देखता है कि उसी का एक हम उम्र सुन्दर सा किशोर उसके सामने खड़ा है।

"कौन हो तुम? मेरे कमरे में कैसे आये।?"

कमल ने आश्चर्य से उससे पूछा।

"मेरा नाम जल है। तुम मुझसे बहुत प्यार करते हो न् बस, तुमसे मिलने आ गया।" जल बोला।

"जल....? लेकिन तुम तो तरल. ...! इस रूप में कैसे? कमल आश्चर्य चकित था।

"जब तुम लोग मुझे किसी भी रूप में, मेरा मतलब, कुंआ, तालाब, बर्तन, बर्फ आदि रूप में ढाल सकते हो तो मैं स्वयं तुम्हारे जैसे रूप में क्यों नहीं ढल सकता।"

"ओह! ठीक ही कहते हो तुम...। मेरा नाम कमल है। कुछ अपने बारे में विस्तार से बतलाओ।" कमल अब कुछ संयत हुआ। "अब क्या बताऊं मित्र! मेरी पीड़ा बहुत गहरी है। 60-70 साल पहले तक जब इंसान प्रकृति प्रेमी था, मेरी हालत अच्छी थी। अब तो मैं दोहरी मार झेल रहा हूं।" जल ने आह भरी।

"वह कैसे" कमल ने पूछा।

"अब तुम्हारे उद्योगों, अस्त्रशस्त्रों और वाहनों के धुओं के ताप से ग्लेशियर के रूप में पिघल कर एक

जल की कमी के कारण सूखती बावड़ी

प्रदूषण की मार झेलते कुएं

ओर समुद्र के खारे पानी के रूप में मैं बढ़ रहा हूं तो दूसरी ओर मीठे पानी के रूप में मैं तेजी से विलुप्त होने के कगार पर हूं। तुम्हें मालूम है कमल, तुम्हारे खुद के आंकड़ों के अनुसार पृथ्वी का 97.4 प्रतिशत पानी समुद्र के खारे पानी के रूप में है। शेष 2.6 प्रतिशत में से केवल 0.8 प्रतिशत मीठा पानी उपलब्ध है। वह भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है। शेष पानी तो ग्लेशियर्स के रूप में जमा है।

तुम्हारी खुद की दुनिया कहती है कि संसार की करीब 6 अरब आबादी में से हर छठे व्यक्ति को पीने का स्वच्छ पानी रोजाना नहीं मिलता। तुम लोगों ने मुझे इस कदर प्रदूषित कर दिया है कि जल संवाहित रोगों के कारण हर आठवें सेकंड में तुम्हारा एक बच्चा दम तोड़ देता है। 2050 तक दुनिया का हर चौथा आदमी पीने के पानी के लिए तरसता रह जायेगा। उद्योगों द्वारा प्रतिवर्ष करीब 55 करोड़ टन अवशिष्ट (वेस्ट) धातु, घोलक व विषाक्त कचरे के रूप में तुम्हारा इंसान मुझ में मिला कर मेरा दम घोंट देता है। तुम मानो या ना मानो लेकिन मुझे (पीने के जल को) लेकर तीसरा विश्वयुद्ध छद्म रूप से आरम्भ हो ही चुका है।" इतना कह कर जल ने एक लम्बी आह भरी।

"लेकिन समुद्रों में अथाह जल भरा है। उसका भी तो अपना महत्व है।" कमल ने पूछा।

"हां यह बात सच है। समुद्री जीवों के लिए तो है ही। तुम जानते हो कमल समुद्रों में एक करोड़ प्रजाति के जीव-जन्तु और पौधे हैं। पांच हजार प्रजाति की तो मछलियां ही हैं। फिर पृथ्वी के भू-भाग पर अस्सी लाख सत्तर हजार किस्म के जीव-जन्तु व वनस्पति हैं। सब मुझ पर निर्भर हैं।"

"लेकिन तुम इतना सब कैसे जानते हो? तुम तो एक निर्जीव तत्व..!" कमल अपनी बात पूरी करता उससे पहले ही जल ने अपने मुंह पर अंगुली रखते हुए कहा-

"शी ई ई...! कम से कम तुम तो ऐसा मत कहो मित्र! तुमने शायद सुना ही होगा कि जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश (स्पेस) से ही यह समस्त संसार बना है। लेकिन इसी के साथ यह भी सत्य है कि हम पांचों में प्रत्येक तत्व स्वतंत्र रूप से चैतन्य भी है। चलो, अभी तो मैं तुम्हें केवल अपनी बात बतलाता हूं। मेरी अपनी आत्मा है। मैं भी हर बात महसूस करता हूं। तुमने शास्त्रों में सुना पढ़ा होगा कि लोग मुझे अभिमंत्रित कर मेरा उपयोग करते हैं। पूर्व में ऋषि मुनि अपने कमंडल से अपनी हथेली में मुझे लेकर मंत्र बोलते हुए जब मुझे सामने वाले पर छिड़क कर श्राप या वरदान देते थे तो जो वे बोलते वह अटल सत्य हो जाता था। तो फिर इस सब में कहीं मेरी भूमिका भी तो होती है। आज भी लोग कोई संकल्प लेते हैं तो हाथ में जल लेकर लेते हैं। कथा और संकल्प के समय कोई साक्षी नहीं मिलता है तो कलश में मुझे भर कर मुझे साक्षी के रूप में स्वीकार करते हैं।" जल ने यह सब एक श्वांस में कह डाला।

"यह सच है कि आप मुझे अच्छे लगते हैं। मैं आपको देख कर कई बार अपनी सुध-बुध भी खो बैठता हूं। लेकिन फिर भी मैं विज्ञान का छात्र हूं। आप कहते हैं आप महसूस करते हैं। इसका वैज्ञानिक आधार क्या है? कमल ने हिम्मत कर यह प्रश्न दागा।"

"तुमने ठीक कहा मित्र। मैं तुम्हारी दुनिया के अर्थात् जापान के महान वैज्ञानिक डॉ. इमोटो द्वारा मेरे बारे में किए गए एक परीक्षण की बात बतलाता हूं। उन्होंने यह सिद्ध करने के लिए कि मैं महसूस भी करता हूं मेरे हाव-भाव के चित्र लेने संबंधी कुछ प्रयोग किये। उन्होंने अपने प्रयोगों द्वारा ऐसी तकनीक का विकास किया जिसके द्वारा जमे हुए जल से बने बर्फ टुकड़ों (स्नो क्रिस्टल्स) के विन्यास का फोटो खींचा जा सके। दूसरे शब्दों में मुझ (जल) पर स्थान विशेष, ध्वनि, भावना और विचार के अनुसार पड़ने वाले प्रभाव के फलस्वरूप मेरी जो आकृति स्नो क्रिस्टल्स पर बनती है और जिसके माध्यम से मैं (जल) स्वयं को अभिव्यक्त करता है, उसका प्रयोग किया। उन्होंने संसार के अनेक हिस्सों से मेरे (जल के) नमूने एकत्रित किये। उनमें अनेक विचार व भावनाओं का संप्रेषण किया। अर्थात् ऐसे पानी की किसी बोतल पर नकारात्मक कुछ शब्द लिखकर चिपकाए व बोले गये। किसी पर प्रार्थना लिखी बोली गई। कहीं किसी बोतल को अशांत, गंदे और दुश्चरित्र लोगों के बीच रखा गया तो कहीं शांत पवित्र स्थान पर रखा गया। मेरे (जल के) ऐसे नमूनों का रवा-करण करने और उसके विन्यास (स्वरूप) का फोटो लेने के लिए उसे अलग-अलग तश्तरियों में डाल कर-25°C तक फ्रीजर में रखा गया। इस डिग्री के शीतलन पर पानी जमकर उसमें रवें बन जाते हैं। फिर सूक्ष्मदर्शी कैमरे से उन पर रोशनी डालकर उन रवों को 200 से 500 गुना बड़ा किया गया। इससे जो आकृतियां फोटो में उभर कर आई वे अलग-अलग पैटर्न लिए हुए थी। अर्थात् जो पापी की बोतल गन्दे, अपवित्र वातावरण में रखी गई थी और जिस पर दैत्य लिखा था उस तश्तरी के रवों में राक्षस की आकृति का फोटो मिला और जिसमें देवदूत लिखा था, पवित्र स्थान पर रखी गई थी उसमें दिव्य ईश्वरीय स्वरूप का फोटो बना। इतना ही नहीं अलग-अलग भाषाओं में एक ही बात लिखी होने पर भी वही परिणाम निकला।

एक बात और सुनो मित्र! जब कोई किसी को गाली देता है तो सामने वाले की श्रवणेन्द्रियां उसके मस्तिष्क को उत्तेजित करती हैं। परिणामस्वरूप तुम्हारे भीतर की ग्रंथियों में हार्मोन के रूप में बैठा मैं (जल) उद्वेलित होकर आंसू व पसीने के रूप में, आंखें लाल हो जाने, कंपकंपी छूटने के रूप में प्रकट होता हूं। इसमें मेरी ही भूमिका होती है। कुछ समझे मित्र!"

"अब कुछ उपाय तो बतलाओ जल भाई, जिससे तुम्हारी पीड़ा कम हो।" यह कहते हुए कमल की आंखें भर आई थी।

"बस कुछ नहीं मित्र! आदमी प्रकृति-मित्र बन जाय। मुझे फालतू खर्च न करें। मुझे प्रदूषित न करें। और हां, जीवन में यह एक पेड़ लगाकर उसे बड़ा अवश्य करें क्योंकि आदमी को आठ क्विंटल लकड़ी तो उसके दाह-संस्कार के लिए ही चाहिये। फिर इमारती लकड़ी, कागज आदि खर्च करता है वह अलग। पेड़ लगाएगा तो मैं बादल के रूप में आसानी से बरस सकूंगा।" जल ने कहा।

कमल जल के इस मानवीकृत रूप में कही बातों से अभिभूत हो गया।

"तुम इतना बोलकर थक गये होंगे भाई। लो मैं तुम्हें तुमको ही भेंट करता हूं।" कमल ने एक गिलास पानी जल को भेंट किया। जल ने उसे मुस्कराते हुए पिया और कमल के गले मिला।

अगले ही पल जल गायब था। पानी के कुछ हलके छींटे माँ द्वारा अपनी आंखों पर पड़ने से कमल की नींद और वह प्यारा सा सपना टूट चुका था।

संपर्क करें:
मुरलीधर वैष्णव
ए-77, रामेश्वर नगर,
बासनी-प्रथम,
जोधपुर-342005 (राज.)
मो.न.: 9460776100